Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

राजकिशोर पट्टनायक की कहानी में असहाय मनुष्य

डॉ. शरत कुमार जेना
असिस्टन्ट प्रोफेसर, ओड़िया विभाग, विश्व–भारती विश्वविद्यालय,शांतिनिकेतन,पश्चिम–बंगाल।

शोधसार – मनुष्य को मनुष्य के रूप में प्रेम करना, एक–दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करना तथा अंतर्मन के सद्‌गुणों जैसे स्नेह, प्रेम, ममता, त्याग और सहनशीलता आदि के माध्यम से दूसरों को अपनाना ही मानवीयता की भावना है। मनुष्य की सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि वह दूसरे मनुष्य में माधव (ईश्वरतुल्य) को देखे और उसे अपनाए। मनुष्य के जीवन को छोड़ कर एक सफल, जीवनमुखी साहित्य का निर्माण संभव नहीं है। इसलिए साहित्य के प्रत्येक भाव में मनुष्य जीवन के विविध पक्षों और मानवीयता की भावना का यथार्थ चित्रण होता ळें आधुनिक ओड़िया लघुकथा प्राचीन काल की साधारण कथात्मक गल्प नहीं है, बल्कि यह वास्तविक जीवन की जिज्ञासाओं और खंडित अभिव्यक्तियों को लेकर कल्पित समस्याओं से ग्रस्त मनुष्य जीवन की व्याख्या है। मनुष्य के प्रति आत्मीय हृदय की श्रद्धा और सहानुभूति दिखाकर तथा अपने कथाशिल्प को मार्मिक और हृदयस्पर्शी बनाकर जो लेखक इसे प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत कर सकता है, वह हैं मानवतावादी रचनाकार राजकिशोर पट्टनायक। उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से लेकर नब्बे के दशक तक की अपनी सृजन यात्रा में उन्होंने असंख्य कहानियाँ रचीं, जो जीवन और जगत की सूक्ष्म समझ तथा गहरी दार्शनिक दृष्टि पर आधारित हैं। हर स्थान पर उन्होंने जीवन के छद्‌म आवरण को उघाड़ा है। उन्होंने सहजता से हृदय की गहराइयों से उठती आत्मीयता और मानवीयता की भावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

मुख्य शब्द– पट्टनायक, कहानी, असहाय, मनुष्य, आत्मीयता, मानवीयता, हृदयस्पर्शी।

इटली के सोनेट के जनक पेत्रार्क के अनुसार मानवतावाद का मूल विषय है मनुष्य की खोज और पृथ्वी की खोज। मनुष्य का सम्मान है, गरिमा है, इच्छाशक्ति है, और है उसका सत्ता, अस्तित्व और अस्मिता। इस स्थिति को समझने और समझाने के लिए किसी धार्मिक विचारधारा की सहायता की आवश्यकता नहीं है। बल्कि जीवन की पीड़ा, वेदना, आनंददृनिरानंद, प्रेमदृप्रवृत्ति आदि तत्व ही प्रमुख हैं। यही तत्व राजकिशोर पट्टनायक की प्रत्येक कहानी का मुख्य स्वर और केंद्रीय भाव के रूप में स्वतंत्र घोषणापत्र हैं।

इन्हीं कहानियों में उन्होंने बाँधा है 'हृदय का बंधन', 'पथर र ढीम' को 'शालग्राम' मानकर उसमें खिलाया है 'कल्पना र फूल'। कहीं 'निशाणखू' बदल जाता है 'तुतपथर' में, तो कहीं 'हाटसउदा' बन जाता

है 'हाटबाहुड़ा', 'पथुकी' असहाय मनुष्य के जीवन की पीड़ादायक स्वाक्षरता को अंकित कर दिया है। इन सभी में जीवन की विविधतापूर्ण अनुभूतियाँ, अनूठे भाव और मधुर संगीत गूँजते हैं। सहृदय मानवीयता से भरपूर इन कहानियों में सौंदर्य और भावपूर्ण स्पर्श सघन रूप में विद्यमान हैं।

राजकिशोर की कहानियों को देखने से स्पष्ट होता है कि वे अपनी सांस्कृतिक विचारधारा में समृद्ध हैं। जीवन की यात्रा में उन्होंने जो देखा, जो अनुभव किया, उसे उन्होंने अपनी कहानियों में मूर्त रूप दिया है। उनके अनुसार दृ "मनुष्य केवल कान से नहीं सुनता, वह हृदय से भी सुनता है। आँखों और कानों से वह सुनने का अनुभव कर सकता है। इसीलिए उसे कहा जाता है 'मनुष्य'।[६] (हाटबाहुड़ा–बुढ़ियानी पूजा) अतः मनुष्य का सुख–दुख, जीवन–यंत्रणा, शोषण और पीड़ाकृसभी कुछ उनकी कहानियों में सहज और सुंदर रूप में चित्रित हुए हैं। 'तुठ पत्थर' से लेकर 'पत्थर ढीमा' तक, हर जगह उन्होंने निर्बाध रूप से जड़ शरीर में जीवन, निर्जीव में प्राण, और स्थिर रूप में मानवीय जीवन के बीजों का रोपण कर दिया है। अपने परिवेश की दुनिया को देख उन्होंने उसकी छलना को बारंबार पढ़ा है और उसकी पराजय को भी अखंड रूप देकर रचा है। इसीलिए न कोई पक्षपात है, न किसी पर कटाक्ष। द्विधा–रहित, द्वंद्व–रहित, निर्बाध और बेलौस रूप में प्रत्येक सामाजिक स्थिति के विरुद्ध उन्होंने व्यंग्य किए हैं। बाहर से सुख–शांति प्रतीत होनेवाले जीवन की पीड़ा और तुच्छता को उजागर किया है और संसारिक आकर्षण में उलझे हुए तथाकथित सभ्य मनुष्य की झूठी भव्यता पर प्रहार किया है। फिर भी कहीं न कहीं हर जगह जीवन–बोध की एक स्वर–लहरी सुनाई देती है । असहायता के भीतर मानवीयता का एक सूक्ष्म सूत्र कहीं न कहीं बुना हुआ प्रतीत होता है।

उनकी कहानियों में मानव और गैर–मानव चरित्रों के बीच एक अविच्छिन्न संबंध दिखाई देता है। पशु–पक्षी, बिल्ली, कुत्ता आदि के चरित्रांकन के माध्यम से उन्होंने मनुष्य के प्रति एक आलोचनात्मक दृ ष्टिकोण रखा है। उनकी कई कहानियों में कुत्ता बन गया है केंद्रीय पात्र। 'पाणिगार', 'युगधर्म', 'द्वंद्व', 'सुलतान', 'प्रतिदान', 'मूक', 'विश्वास', 'पशु', 'नीड़', 'मूर्ख', 'जीवन र माया', 'कुटिल मन र परिधि' आदि कहानियों में उन्होंने गैर–मानव पात्रों को मुख्य रूप में लेकर मनुष्यों के साथ उनके संबंध को अत्यंत गहराई और सूक्ष्मता से दर्शाया है। इन कहानियों में, कुत्ते, बिल्ली, गाय, घर के चूहे आदि पशु–पक्षियों को स्थान मिला है और उन्होंने ही मानवीय भाव–स्पंदन की रचना की है। आज के समय में जब मनुष्य के भीतर मानवता का क्षरण हो रहा है, संघर्षमय असहाय जीवन में जब चारों ओर की दुनिया को मनुष्य भूल गया है, तब ये मूक प्राणी ही जीवन का धर्म सिखा रहे हैंय इन निराकार प्राणियों में ही जीवन का स्पंदन साकार हो रहा है।

'पाणिगार' कहानी में एक बूढ़े हो चुके कुत्ते को कैसे गैर–जरूरी समझा जाने लगता है, यह वर्णित है। 'सुलतान' कहानी में एक देशी कुत्ता और एक विदेशी कुत्ते के बच्चे की कहानी चित्रित है। वर्णित कहानी में विदेशी कुत्ते का बच्चा सबका लाड़ला है और देशी कुत्ते का बच्चा उपेक्षित। 'प्रतिदान' कहानी में 'टॉमी' नामक कुत्ते के प्रति उम्र के समय स्नेह और उम्र ढलने के बाद अत्याचार की कहानी उभर कर आती है। कुत्ते के माध्यम से लेखक समाज के निम्न वर्ग के लोगों के प्रति उच्च वर्ग के लोगों के मनोभाव को प्रकट

करते हैं और मानवीयता का बोध उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार 'मूक' कहानी में कुत्ते 'जून' के माध्यम से अधीनस्थ कर्मचारी 'विनोद बाबू' का तुलनात्मक वर्णन है। 'जून' जैसे मालिक से मार और गालियाँ खाता है । विनोद बाबू भी उसी प्रकार मार गालियां खाते है । ष्इसलिए उसके भीतर कई तरह की प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं। अंततः वह समझ पाता है कि संसार में उन्नति करने के लिए कुत्ते की तरह चरण चाटना पड़ेगा। 'जून' की तरह मार–गाली सहकर भी चुप रहना पड़ेगा। जिस प्रकार जून को घर से मारकर बाहर निकाल दिया गया, वैसे ही नौकरों को भी घर से बाहर निकाल दिया जाता है। यहाँ पूंजीवादी या धनी वर्ग का सर्वहारा या श्रमिक वर्ग के प्रति जो मनोभाव है, वह स्पष्ट होता है। लेखक की दृष्टि में श्नौकर का स्थान हमेशा उसी स्तर पर होता है। जो मिस्त्री घर बनाता है, जो बढ़ई साज–सामान बनाता है, जो मिठाई बनाता है दृ वे सभी उसका उपभोग नहीं करते। श्रमिक देश को बनाता है, नेता वहाँ राजा होता है। नौकर चाहे जिसका भी हो, घर में उसका कोई स्थान नहीं होता। वह घर का नौकर है, देश का नौकर है, नेताओं का नौकर है, बड़े अफसरों का नौकर है और बड़े धनियों का भी नौकर है। उसका स्थान जहाँ था, वहीं बना रहता है।श्ष (निशाणखु) लेखक का समाज के निचले तबके के प्रति कितना गहरा सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण है, यह अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली रूप में प्रकट होता है।

'पशु' कहानी में कुत्ते के चरित्र के माध्यम से मातृहृदय की शाश्वत भावना को प्रकट किया गया है। कुतिया 'टॉमी' एक आवारा कुत्ते के साथ मिलकर चार बच्चों को जन्म देती है। मनुष्य की गोद से बचा कर रखने के साथ वह कुतिया स्वयं अपनी गोद में बच्चों को समेटे रहती है। जब बच्चे उसकी थन को खींचते और नोचते हैं, तब भी वह उन्हें दूध पिलाने से मना नहीं करती। बाबू के घर में अवहेलना और मार–गाली के कारण उसके तीन बच्चे मर जाते हैं। बचा हुआ अंतिम बच्चा मालिक उसे पड़ोसी के घर दे देता है। इस दृश्य में टॉमी का मातृहृदय बिलख उठता है। पुत्र वियोग में वह पिछवाड़े की दीवार फांदने की कोशिश करते हुए अंततः मर जाती है। एक अत्यंत साधारण कहानी के माध्यम से लेखक ने अपने असाधारण हृदय की झलक दी है। चाहे वह मनुष्य हो या पशु, उसके भीतर की ममता और आत्मीयता एक समान होती है। संबंधों का अटूट बंधन और जिज्ञासु जीवन की तलाश दृ यही जीवन का परम सत्य है। पशु और मनुष्य के भीतर के जीवन–दर्शन को लेकर लेखक कहता है दृ 'मनुष्य उसके छोटे बच्चे को चुरा ले जाता है, क्यों की वह ताकतवर हैं। उसे मरने की राह दिखाते हैं, क्यों की वह बुद्धिमान है। और अंततः उसके मृत्यु के पश्चात् उसे छुड़वाने को कोशिश करते है क्योंकि वह सहृदय है।' (निशाणखु) यहाँ लेखक ने मानवीयता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया है। मनुष्य समाज और मानवीय संवेदना के प्रति लेखक की संवेदनशील व्यंग्यात्मक दृ ष्टि लगभग उनकी प्रत्येक कहानी में दिखाई देती है। जैसे कि दृ 'कल्पना र फूल' कहानी में बैलश, 'नीड़' में गौरेया पक्षी, 'जीवन र माया' में बिल्ली, कुत्ता और बंदर, 'कुटिल मन र परिधि' में हठीला बैल, 'काणीबिराड़ी' में अंधी बिल्ली आदि जैसे मानवेत्तर चरित्रों के माध्यम से वे आधुनिक मनुष्य समाज की असली तस्वीर उजागर करते हैं। इसमें सर्वहारा, गरीब, दलित और उपेक्षित असहाय मनुष्यों के दुख और दैन्य को प्रकट करते हुए मानवीयता की आवाज स्पष्ट रूप से गूंजती है। मनुष्य के भीतर के वास्तविक मनुष्य का अन्वेषण,

जीवन के भीतर महानता की खोज और मनुष्य तथा पशु के बीच की अटूट आत्मीयता को लेकर उनका कथा–संसार विस्तृत और गहराईपूर्ण है।

'प्रायः प्रत्येक कथा में एक सामान्य जिज्ञासा के माहौल के भीतर मानवेत्तर प्राणियों के प्रति व्यग्रता दिखाई गई है। कथा की कहानी के भीतर जहाँ थोड़ा अवसर मिलता है, वहाँ वे मानव समाज और मानव जीवन से तुलना करते हैं और आवश्यकतानुसार जीवन के प्रति व्यंग्यपूर्ण वक्तव्य भी बढ़ा देते हैं। मनुष्य के छद्म आवरण के प्रति उनकी जो एक असूयाभावना सतत जागृत रहती है, वही उनकी कथाओं की अंतरात्मा को विशेष महत्व प्रदान करती है। वास्तव में मानवेत्तर चरित्रों को लेकर कहानी रचना में राजकिशोर की दक्षता है और निपुणता भी।' (ओड़िया कथा, रचनाकार सह्रदय – कपिलेश्वर गाहाण, अग्रदूत, कटक, २००६, पृ. ४३)

समाज में रहने वाले निचले स्तर के लोगों का कार्य ही ऊपरी स्तर के लोगों को सुख और विलासिता में जीने का भोजन प्रदान करता है। ऊपरी स्तर के उपभोक्ता वर्ग निचले स्तर के लोगों को 'तुठपथर' अर्थात् अपमानजनक व्यवहार करते हैं। इस प्रकारता को देखकर अनुभव किया गया है सर्वहारा मनुष्य के ह्रदय की वेदना और अधस्तन कर्मियों की असहायता। उनकी असहायता को अपनी मानवीयता के स्पर्श से वर्णित किया गया है। 'पथर', 'पाणिगर', 'काकर', 'पाउँश', 'काणीबिराड़ी', 'बारमासी', 'विश्वास' आदि कथाएँ इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन कथाओं में वे प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के भीतर मानवीय सद्भावना का सृजन करते हैं।

कथाकार की एक अन्य श्रेष्ठ कथा 'घास' में समाज के दीन–दुखी व्यक्तियों के प्रति गहरा सहानुभूति व्यक्त हुई है। मात्र सात पैसे दैनिक मजदूरी देकर लिंगापरि एक बच्चे की श्रम शक्ति का शोषण करने वाले उपभोक्ता मनुष्य के प्रति उन्होंने गहरी प्रतिक्रिया प्रकट की है। फिर भी जीने के लिए विपरीत परिस्थिति में संघर्ष कर रहे लिंगा के परिश्रम की प्रशंसा भी की है। इसके भीतर आशावाद की स्वर भी सुनी जाती है। 'विश्वास' कथा में पागल व्यक्ति के प्रति उनका वक्तव्य है दृ 'पागल होकर कोई माँ के पेट से नहीं गिरता। संसार के पच्चीस घटनाएँ देखकर मनुष्य कालक्रम में उसका एक विचार मालमसाला दे दे कर एक दिन में पागल बोला जाता है।' (निशाणखु) इससे स्पष्ट होता है कि समाज के एक पागल व्यक्ति के प्रति भी कथाकार कितना दर्दी और चिंतनशील है। इसी प्रकार 'जंजाल', 'आसामी', 'माली', 'शालग्राम' आदि कथाओं में भी सामान्य स्तर के दुख और यातना वर्णित हैं। सामान्य लोगों के संबंध में वे कहते हैं दृ 'संसार का मूल होता है सामान्य लोग दृ जो हल्के काम करते हैं, पेड़ काटते हैं, मछली पकड़ते हैं, ऑफिस में बैठकर झाड़ू लगाते हैं, टाइप करते हैं, दूसरों के आदेश मानते हैं दृ इन्हीं को लेकर संसार चलता है। किंतु संसार में इन्हें सामान्य आदमी कहा जाता है।' ('शालग्राम' दृ कालापरदा) कहानीकार राजकिशोर एक जीवनवादी लेखक हैं। उनका जीवन सामान्य मानव का जीवन, असहाय मनुष्य का जीवन, दुःखी, दीन और दलितों का जीवन है। उनके मत में निचले स्तर के लोग ही समाज और सभ्यता के विकास के आधार हैं। इसलिए वे

उन असहाय लोगों के लिए अपने हृदय की अनाविल उत्साह, उमंग और मानवीयता के अभिव्यक्ति के अनोखे उद्‌गार रखते हैं।

यह देखा जा सकता है कि उनके लेखकीय हृदय से निकली मानवीयता की अनुभूति युगीन विचारधारा में भी गतिशील है। उनके कहानी लेखन का समयकाल बीसवीं सदी के चालीस के दशक से शुरू होकर नब्बे के दशक तक विस्तृत है। अतः स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद के सामाजिक–राजनैतिक परिवेश में जीवन के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता विद्यमान है। मार्क्सवाद और गांधीवाद संजात मानवीयता की अनुभूति जब ओड़िया कहानी के भावपक्ष को छूती है, उस समय राजकिशोर की कथाएँ और अधिक जीवनवादी बन जाती हैं। समाजवाद, साम्यवाद, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, शोषण आदि माध्यम से उन्होंने मानवीयता के पक्ष को अधिक विस्तृत और प्रज्वलित किया है। जीवन के मानवीय रहस्यों को उद्‌घाटित करते हुए वे दार्शनिक सरलता के साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं का परिशीलन करते हैं। परंतु अंत में एक ही बात है कृ समाज के सामान्य असहाय मनुष्य की वेदना। जीव, जड़, जंतु, पक्षी आदि किसी भी न्यूनतम जीवित या निर्जीव वस्तु में मानवीयता के स्पर्श की अनुभूति मिलती है। उनके कथाओं की अंतरजगत को देखने पर लगता है कि राजकिशोर वास्तव में कहीं भी असहाय हैं। उस असहायता और शून्यता से उत्पन्न तीव्र–मीठे फलस्वरूप उनके कथाओं का साम्राज्य बनता है। वह असहायता के साम्राज्य में मानवीयता के स्पर्श से 'पूर्णमिदं' के मंत्र का जप करने वाले एकमात्र राजा हैं कृ राजकिशोर।

सहायक ग्रंथसूची

1. खुंटिया, डॉ.- ब्रह्मानंद. स्वतंत्रता परवर्त्ति प्रमुख गल्प स्रष्टा, कटक, तीसरा संस्करण, 2022।
2. प्रधान, डॉ.कृष्णचंद्र- ऑडिया कथा कल्पना र दिग ओ दिगंत, सत्यनारायण बुक स्टोर, कटक, प्रथम संस्करण, 2010।
3. सामल, वैष्णवरण- ओड़िया क्षुद्रगल्प र इतिवृत्ति की उत्पत्ति, फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक, प्रथम संस्करण, 2019।
4. बारिक, डॉ. कविता- शहे तेइस वर्ष र आधुनिक ऑडिया क्षुद्र गल्प एक तात्विक विश्लेषण, कटक, चौथा संस्करण, 2022।
5. सामल, डॉ. वैष्णवचरण- ओड़िया क्षुद्र गल्प र इतिहास, बुक्स एण्ड बुक्स, कटक, प्रथम संस्करण, 1990।
6. सामल, डॉ. वैष्णवचरण- ऑडिया गल्परू गति ओ प्रकृति, साथी महल, कटक, दूसरा संस्करण, 1991।